मुद्रायें — कला के सन्दर्भ में मुद्रा का अर्थ है — हाथों, पावों, मुख, नेत्रों आदि की मुद्रा भारतीय चित्रकला में मुद्राओं का आदर्श रूप मिलता है। अधिकांशतः नृत्य ~~मुद्राओं~~ मुद्रायें ही भारतीय कला में अंकित हैं। मुद्राओं से ही आकृति के भावों को दर्शाया गया है - राजपूत, मुगल एवं अजंता शैली की नृत्य मुद्रायें विश्व प्रसिद्ध हैं। ध्यान, उपदेश, क्षमा, भिक्षा, त्याग, वीरता, क्रोध, विरह, प्रतीक्षा, काँटा निकालने की पीड़ा, एकाकीपन आदि भावों को मुद्राओं से ही दर्शाया गया है।

आलंकारिकता — अलंकरण से चित्र संवरता है और वह आकर्षक सिद्ध होता है। अजंता की गुफाओं में प्रत्येक चित्र में अलंकरण का बड़ी कुशलता से प्रयोग किया गया है।

रेखा — रेखा दो बिन्दुओं या सीमाओं के बीच की दूरी होती है जो बहुत सूक्ष्म होती है जो गति की दिशा को निर्देश करती है। लेकिन कला पक्ष के अन्तर्गत रेखा का प्रतिकात्मक महत्व है और वह रूप की अभिव्यक्ति व प्रभाव को अंकित करती है। भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान है रेखाओं के बिना किसी भी कलाकृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

रूप या आकृति — रूप का अर्थ है - आकृति हमें क्या समझा रही है? इसे ही आकृति का रूप कहा जाता है। दृश्य कलाओं में रूप वह है जो सभी ओर से रेखाओं अथवा अन्य रूपों से घिरा हुआ या सीमित हो। 'रूप' एक धारणा है जो ~~का~~ पारस्परिक सम्बन्ध के नियम पर आश्रित रहती है। रूप के आयामों को ~~तकनिक~~ से थोड़ा-सा परिवर्तित करके कलाकार कलाकृति का रूप ही बदल देता है। आयामों के तकनीक से परिवर्तन से हँसता चेहरा रोता

Scanned with CamScanner

है ~~ऐसा~~ महसूस होने लगता है और रोता चेहरा हँसता है।

रंग (वर्ण) — किसी भी कलाकृति की शोभा उसके रंग से होते हैं - (i) प्राथमिक रंग — प्राथमिक रंग वह होते हैं जो किसी भी रंग के मिश्रण से नहीं बनते जो प्राकृतिक से बने हैं उसे (Primary Colour) कहते हैं जैसे लाल, नीला, पीला और हरा। (ii) द्वितीयक रंग — वे रंग जो दो रंगों को मिलाकर एक नया रंग बनाया जा सके उसे (Secandary Colour) कहते हैं।

प्रकाश की मात्रा पीले रंग में सबसे अधिक और नीले रंग में सबसे कम होती है। रंगों के उष्ण तथा शीतल प्रभाव भी माने जाते हैं। पीले तथा बैंगनी न उष्ण हैं न शीतल। लाल तथा नारंगी उष्ण और हरे तथा नीले शीतल हैं।

मान (Value) — रंगत के हल्के और गहरे पन को मान कहते हैं जब रंग में सफेद रंग मिलते हैं तो मान में वृद्धि होती है और काला रंग मिलाते हैं तो मान में ~~कमी~~ होती है।

पोत-(Textuve) — किसी भी वस्तु के धरातलीय गुण को पोत कहते हैं जिस प्रकार कपड़े की बुनावट मोटी या बारीक होने से उसके धरातलीय प्रभाव में अन्तर आ जाता है ~~उसी~~ प्रकार चित्र मूर्ति या भवन के धरातलों के चिकने या खुरदरे होने से उनके धरातलीय प्रभाव में अन्तर आ जाता है। इसी को पोत ~~कहते~~ कहा जाता है।

अन्तराल (Space) — "चित्रकार का चित्र सृजन में चित्र का वह आधार व ~~क्षेत्र~~ क्षेत्र जिसपर कलाकार सृजन कार्य करता है वह अन्तराल कहलाता है"।

Scanned with CamScanner

दृश्यकला के इस तत्व का महत्व इसी से स्पष्ट है कि जिन कृतियों में इस तत्व का कुशलता से प्रयोग किया जाता है वे दूर से ही ध्यान आकर्षित कर लेती है।

Scanned with CamScanner